हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ : अंत:संबंध और वैशिष्ट्य

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रायोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

27-28 जनवरी, 2017

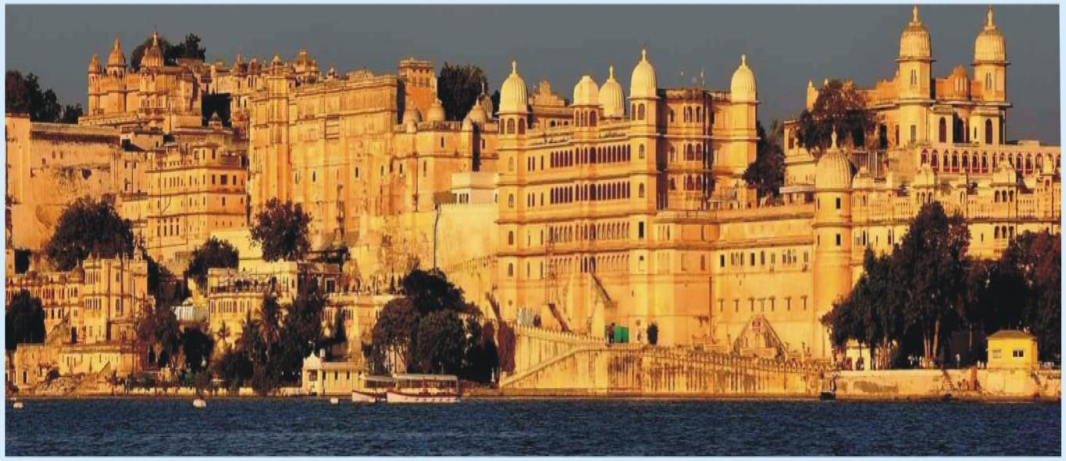

हिंदी विभाग

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय

उदयपुर, राजस्थान 313001

आधार विचार

हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में घनिष्ठ संबंध है। विडंबना यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के भाषिक और साहित्यिक वैशिष्ट्य की चर्चा तो अकसर होती है, लेकिन इनके परस्पर घनिष्ठ संबंधों की पहचान की ओर कम ही लोगों का ध्यान गया है। उपनिवेशकाल से पहले तक जब भारतीय भाषाओं को औपचारिक पहचान नहीं मिली थी, तब यहाँ का भाषायी परिदृश्य अलग था। यहाँ की भाषाएँ और बोलियाँ एक-दूसरे से इस तरह से संबद्ध थीं कि इनको पृथक् और वर्गीकृत करना कठिन था। भारत के भाषा सर्वेक्षण के दौरान जॉर्ज ग्रियर्सन को इसी तरह की मुश्किल का सामना करना पड़ा। उनसे पहले तक तो यूरोपीय विद्वान् एक-दूसरे से भिन्न चरित्र और स्वभाव वाली भारतीय भाषाओं की, इनकी परस्पर संबद्धता के कारण सदियों तक कोई अलग पहचान नहीं बना पाए। जॉर्ज ग्रियर्सन ने खींच-खाँचकर भारतीय भाषाओं का जो वर्गीकरण और विभाजन किया उससे पहली बार भाषाओं को एक-दूसरे से अलग पहचान मिली। विडंबना यह है कि खींच-खाँचकर कर किया गया वर्गीकरण और विभाजन तो हमारी भाषायी समझ का हिस्सा हो गया, लेकिन भारतीय भाषाओं की परस्पर घनिष्ठ संबद्धता संबंधी कई बातें जो सर्वेक्षण के दौरान सामने आईं, उन पर कम लोगों का ध्यान गया। भारतीय भाषाएँ एक-दूसरे से इस तरह जुड़ी हुई हैं कि वे एक-दूसरे से कहाँ और कैसे अलग होती हैं, यह तय करना मुश्किल काम है। अकसर वे दूसरी भाषा की सीमा शुरू होने से पहले ही उसके जैसी होने लगती हैं। ग्रियर्सन ने भी सर्वेक्षण के दौरान यह महसूस किया। उसने इसके प्रतिवेदन के पूर्व कथन में भारत में क्षेत्रीय भाषाओं की सीमाओं की चर्चा करते हुए लिखा कि ''सामान्यत: जब तक विशेष रूप से जाति (रेस) एवं संस्कृति में अंतर न हो या बड़ा पहाड़ या प्राकृतिक बाधा उपस्थित न करे, तब तक भारतीय भाषाएँ एक-दूसरे में विलीन हो जाती हैं।'' भारत में भाषा के क्षेत्रीय रूपों को पहचान देने का आग्रह उपनिवेशकाल से पहले तक लगभग नहीं था। भाषा का क्षेत्रीय वैशिष्ट्य यहाँ सदियों से है, लेकिन इसके आधार पर पृथक् भाषायी पहचान का आग्रह यहाँ कभी नहीं रहा। अपनी भाषा की अलग पहचान और उसके नामकरण की सजगता यहाँ लगभग नहीं थी। भारतीय भाषाओं को उनकी क्षेत्रीय विशेषताओं के आधार पर पहली बार वर्गीकृत और विभक्त करने वाले जॉर्ज ग्रियर्सन ने भी भाषा के मामले में भारतीयों के इस ख़ास नज़रिये को लक्ष्य किया। उन्होंने सर्वेक्षण के अपने प्रतिवेदन के पूर्वकथन में एक जगह लिखा कि 'एक सामान्य भारतीय ग्रामीण यह नहीं जानता कि जिस बोली को वह बोल रहा है उस का नाम भी है। वह अपने यहाँ से पचास मील दूरी पर बोली जानेवाली बोली का नाम तो बता सकता है, किंतु जब उसकी बोली का नाम पूछा जाता है तो वह कह उठता है कि ओह, मेरी बोली का तो कुछ नाम नहीं है, यह तो विशुद्ध भाषा है। भारत में देशभाषा अथवा बोलियों की नाम संज्ञाओं को मान्यता और स्वीकृति उपनिवेशकाल में मिली। यहाँ के लोग अपनी भाषा को देशभाषा या बोली कहते थे या फिर दूसरे लोग उसका क्षेत्र के आधार पर कोई नाम कौशली, गुजराती आदि रख देते थे। प्रस्तावित संगोष्ठी हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में अंतर्निहित एकता की पहचान के लिए आयोज्य है।

विचार सत्र

- भारतीय भाषाओं और साहित्य में अंतर्निहित एकता
- भारत में भाषा सर्वेक्षण और भाषायी पहचानें
- हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, अवधी, ब्रज, मराठी आदि का भाषिक और साहित्यिक वैशिष्ट्य
- हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाएँ

पंजीयन

- पंजीयन शुल्क : विद्यार्थी/ शोधार्थी रु. 700, शिक्षक एवं अन्य रु. 1,000/- (आवास व्यवस्था 500 रु. अतिरिक्त)
- पंजीयन शुल्क विभाग में नकद जमा करवाया जा सकाता है, अथवा Head Depatement of Hindi, M.L.S. University, Udaipur (Raj.) के नाम से चेक या डी.डी. द्वारा भेजा जा सकता है अथवा सीधे ICICI Bank खाता संख्या 694201437677,IFSC Code - ICICI0006942 में भी जमा कराया जा सकता है।
- सीधे बैंक में राशि जमा कराने की स्थिति में बैंक रसीद पंजीयन प्रपत्र के साथ अवश्य भेज दें।

अन्य

- पंजीयन एवं आलेख प्रेषण की अंतिम तिथि 15 जनवरी, 2017 निश्चित की गई है।
- पंजीयन की नियत तिथि के पश्चात आवास व्यवस्था प्रतिभागी को स्वयं अपने स्तर पर करनी होगी।
- संभागियों को किसी भी प्रकार का यात्रा-भत्ता आदि देय नहीं होगा।
- आलेख कृतिदेव-10 या मंगल यूनिकोड में टंकित होने चाहिए। संदर्भीकरण विश्वविद्यालय वेबसाइट पर उपलब्ध नियमानुसार होना चाहिए।
- संयुक्त शोध पत्र होने पर सभी लेखकों को पृथक-पृथक पंजीयन कराना अनिवार्य होगा।
- आयोजन तिथियों के लिए आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था आयोजकों द्वारा की जाएगी।

हिंदी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय एवं उदयपुर

विभाग मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर की संघटक इकाई है। विश्वविद्यालय राज्य का पहला विश्वविद्यालय है, जिसको राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद् (नेक) ने 'ए' श्रेणी प्रदान की है। विभाग देश के पुराने और प्रतिष्ठित हिंदी विभागों में से एक है। हिंदी साहित्य के उन्नयन और प्रचार-प्रसार में इसकी निर्णायक भूमिका है। यह निरंतर सक्रिय विभाग है। संगोष्ठियों, कार्यशालाओं और व्याख्यानों के माध्यम से इसने अपनी पहचान बनाई है।

अपनी स्थापना से ही विभाग शिक्षण एवं अनुसंधान के क्षेत्र में उत्कृष्टता बनाए रखने के लिए प्रयासरत है। उच्च नैतिक मूल्यों, वैज्ञानिक सोच पैदा करने और उच्च शिक्षा के उभरते हुए क्षेत्रों के साथ तालमेल रखने की दिशा में भी विभाग संकल्पवान है। यह विभाग सूचना प्रोद्यौगिकी का शिक्षा एवं शोध के स्तर पर अधिकतम उपयोग करने में अग्रणी है, साथ ही भौतिक आधारभूत सुविधाओं की दृष्टि से भी समृद्ध है।

उदयपुर दक्षिणी राजस्थान का ऐतिहासिक नगर है। यह नगर अपने भव्य सांस्कृतिक अतीत, ऐतिहासिक इमारतों और झीलों के लिए विख्यात है। चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, हल्दीघाटी, नाथद्वारा आदि कई पर्यटन स्थल उदयपुर के पास स्थित हैं। उदयपुर हवाई और रेल यातायात से जुड़ा हुआ है।

संपर्क

प्रो. माधव हाड़ा
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
09414325302

डॉ. नीतू परिहार
09413864055

डॉ. नवीन नन्दवाना
09828351618

डॉ. आशीष सिसोदिया
09414851055

डॉ. राजकुमार व्यास
09928788995

डॉ. नीता त्रिवेदी
09950960999

e mail : hindimlsu@gmail.com
website : www.mlsu.ac.in

पंजीयन प्रपत्र

हिंदी विभाग

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रायोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ: अंत:संबंध और वैशिष्ट्य

27–28 जनवरी, 2017

नाम : .....

पद :.....

संस्था : .....

पत्र व्यवहार का पता : .....

.....

मोबाइल नं.....

ई–मेल : .....

शोध पत्र का शीर्षक : .....

.....

पंजीयन शुल्क : राशि..... नगद/

बैंक जमा/चेक/डी.डी. नं .....दिनांक.....

बैंक का नाम.....

आवास व्यवस्था चाहिए : हाँ/नहीं.....

उदयपुर पहुँच की दिनांक व समय.....

घोषणा

मैं शपथपूर्वक घोषणा करता/करती हूँ कि प्रस्तुत शोध पत्र मौलिक, अन्यत्र अपठित एवं अप्रकाशित है। मैं आपको इसके प्रकाशन की स्वीकृति प्रदान करता/करती हूँ।

हस्ताक्षर